शुक्र ग्रह की पौराणिक कथा

भगवान शंकर के परमभक्त और दैत्यों के गुरू शुक्राचार्य को शुक्र के नाम से भी जाना जाता है। ऋषि भृगु के पुत्र हैं शुक्राचार्य, जिनका नाम पहले एक सिद्ध ऋषि के नाम से जाना जाता था वह था उषान्। मत्स्यपुराण के अुनसार शुक्राचार्य ने भगवान भोलेनाथ के लिंग की स्थापना करके घनघोर तपस्या की जिससे भगवान भोलेनाथ प्रसन्न होकर उनके सामने प्रकट हो गये और शुक्राचार्य को अनेकों औषधियों, मंत्रों, रसों, समस्त सम्पतियों आदि का स्वामी बनाने के साथ उन्हें मृतसंजीवनी विद्या का भी ज्ञान दे दिया। असुरों के कल्याण के लिए ऐसी तपस्या आज तक किसी ने नही की थी, दैत्यों के कल्याणार्थ प्रयत्न में उन्होंने अपनी एक आंख भी गंवा दी थी इसलिए इन्हें दैत्यों का गुरू पद प्राप्त हुआ। शुक्राचार्य ने अपनी समस्त सम्पत्ति भी दैत्यों को दे दी और स्वयं तपस्वी जीवन स्वीकार कर लिया। दैत्यों का एक राजा अन्धक, उसने देवताओं पर चढ़ाई कर उन पर बहुत अत्याचार किया और उन्हें बहुत सताने लगा, इस युद्ध में जो भी दैत्य या असुर आदि मारे जाते उन्हें शुक्राचार्य जी मृतसंजीवनी के प्रयोग से फिर से जीवित कर देते थे, इस प्रकार अन्धकासुर का देवताओं से हारना लगभग असंभव था, इसलिए सभी देवता दुःखी होकर भगवान शंकर के पास गये और अपनी व्यथा सुनाई। भगवान शंकर ने शुक्राचार्य को अपने पास बुलवाया और उसे जीवित ही निगल गए। अन्धकासुर की शक्तिशाली दैत्यों की सेना को पुनः जीवनदान देने वाला अब कोई नही था। धीरे-धीरे अन्धकासुर कमजोर पड़ गया और उसे पराजय का मुख देखना पड़ा। इधर शुक्राचार्य ने भगवान शंकर के उदर में ही उनकी आराधना करना आरम्भ कर दिया और भगवान शंकर के वीर्य के साथ शुक्राचार्य भी भगवान शंकर के उदर से बाहर आ गए, इस तरह शुक्राचार्य के प्रकट होने पर भगवान शिव और माता पार्वती ने उन्हें पुत्र रूप में स्वीकार कर लिया, साथ ही उन्हें अमर होने का वरदान भी दे दिया।

शुक्र ग्रह की पौराणिक कथा का ज्योतिषीय संबंध

कठिन तप से प्राप्त अपनी सम्पत्ति असुरों को देना, पुत्री मोह में आकर अपने अमूल्य ज्ञान को भी दे देना इस बात का प्रमाण है कि शुक्र आपको सम्पन्नता, कला और अमूल्य ज्ञान दे सकता है यदि आप उसके लिए पूर्ण रूप से प्रयत्नशील हैं। भगवान शंकर के वीर्य के साथ प्रकट होने के कारण शुक्र ग्रह को जातक के वीर्य का प्रबल कारक ग्रह भी माना जाता है।

शुक्र शुभ ग्रहों में गिना जाता है। यह एक दिन में लगभग 61 मिनट से लेकर 83 मिनट तक चलता है। एक राशि में लगभग 25 से 27 दिनों तक का रहता है। शुक्र कुण्डली में पुरूषार्थ (वीर्य) के बारे में बताता है। शुक्राचार्य को दैत्यों का गुरू भी कहा गया है, जो अपने कठिन तप, परिश्रम आदि से संसार में सभी प्रकार के आनन्द, ऐश्वर्य, सुख-सुविधाओं को प्राप्त करने में सफल होते हैं। आपकी कुण्डली में शुक्र बलशाली हो, शुभ स्थान पर हो, शुभ ग्रहों और बलशाली ग्रहों के संपर्क में हो तो आपको भी जीवन में समय-समय पर ऐश्वर्य और सुख-सुविधाओं की कमी नही रहेगी, परन्तु यदि शुक्र नीच, अस्त, वक्री या बलहीन हुआ तो बहुत अधिक प्रयत्न के बाद भी सुख-सुविधाओं का अभाव ही रहेगा।

शुक्र ग्रह के कुछ अन्य ज्योतिषीय संबंध निम्न प्रकार के हैं:-

1	कारक	काम
2	संबंध	स्त्री (पत्नी)
3	स्वभाव	शुभ और सौम्य
4	गोत्र	भार्गव
5	दिन	शुक्रवार
6	वाहन	सफेद घोड़ा
7	रंग	स्वेत
8	दिशा	दक्षिण-पूर्व (South-East)
9	गुण (प्रकृति)	रजोगुणी
10	लिंग	स्त्री

11	वर्ण (जाति)	ब्राह्मण/वैश्य
12	तत्व	जल
13	स्वाद	खट्टा
14	धातु	चांदी
15	ऋतु	वसन्त
16	दृष्टि विशेष	7 (पूर्ण दृष्टि)
17	भोजन	राजमा
18	शारीरिक अंग	वीर्य
19	अन्न दान	चावल
20	द्रव्य दान	दूध
21	विंशोत्तरी महादशा	20 वर्ष
22	जप संख्या	16,000
23	रत्न	हीरा, (संस्कृत में हीरक)
24	उपरत्न	तंकु हीरा, कसला, सिम्मा, ओपल
25	सहचरी	सुकिर्थी और उर्जस्वथी
26	चरादि	चर
27	समिधा	गूलर
28	शुक्र के मित्र ग्रह	बुध, शनि, राहु, केतु
29	शुक्र के सम ग्रह	मंगल, बृहस्पति
30	शुक्र के शत्रु ग्रह	चन्द्रमा, सूर्य
31	उच्च राशि	मीन (0° से 27° तक)
32	नीच राशि	कन्या (0° से 27° तक)
33	मूल त्रिकोण राशि	तुला (0° से 15° तक)
34	स्वग्रही राशि	तुला (16° से 30° तक)
35	राशि स्वामी	वृष, तुला
36	नक्षत्र स्वामी	भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा

37	शुक्र के आधी देवता	इन्द्राणी (शची)
38	शुक्र के प्रत्यधि देवता	इन्द्र
39	शुक्र ग्रह का कद	ह्रस्व (छोटा)
40	शुक्र ग्रह शुष्काादि में	जलीय ग्रह